राष्ट्र केवल सीमा से नहीं बनता

भू-सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर व्याख्यानमाला

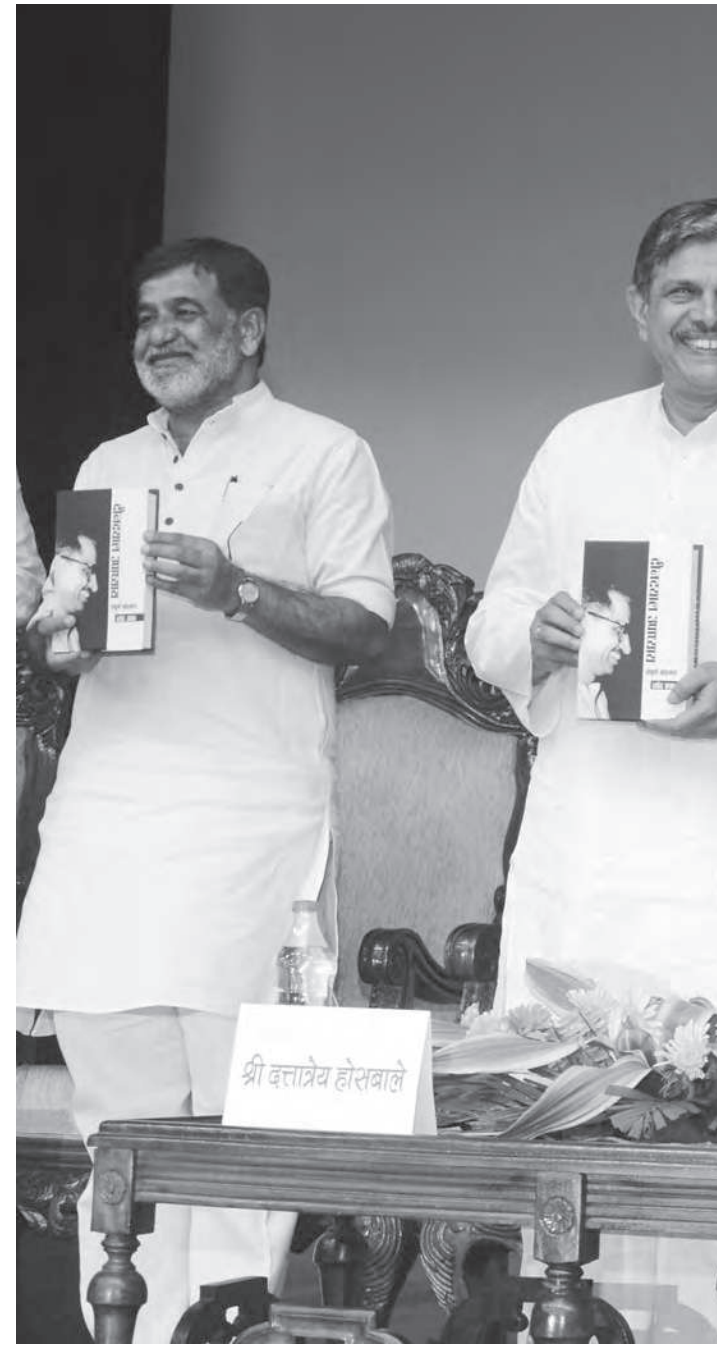

जज़्मू-कश्मीर। भारत ऐसा देश है, जहां रहन-सहन, बोलचाल अलग-अलग है, लेकिन लोगों की सोच एक होती है। इसके पीछे वजह ये है कि कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक हर भारतीय एक जैसा चिंतन करता है। यह बात राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह-सरकार्यवाह माननीय दत्तात्रेय होसबाले ने वर्तमान संदर्भ में भू-सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर आयोजित व्याज़्यानमाला में कही।

उन्होंने कहा कि कोई राष्ट्र केवल सीमाओं से नहीं बनता। उसके लिए लोगों की सोच होना जरूरी है। अन्यथा राष्ट्र एकजुट नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि भारत के लिए भू-सांस्कृतिक राष्ट्रवाद ही वास्तविकता है। वह बोले कि पिछले कुछ समय से राष्ट्रीयता शज़्द विवादित विचारों के रूप मे उभरा है। एकता, एकात्मता, स्वभाव, गुण, धर्म, चिंता को लेकर भी समस्याएं उभरी हैं। उन्होंने कहा कि दुनिया में ऐसा कोई राष्ट्र नहीं है जिसमें इतना भ्रम हो। ऐसे में राष्ट्रीयता का आधारभूत तत्व किसे माना जाय। राष्ट्र धर्म के नाम पर नहीं बनता। यदि ऐसा होता तो दुनिया में कई मुस्लिम राष्ट्र बन गए होते। ऐसा होता तो ईसाई धर्म और अन्य धर्म के भी राष्ट्र बने होते। राष्ट्र मानव के विकास के लिए महत्वपूर्ण है और वह तीन तत्वों से बनता है। इसमें भूमि, जन और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद शामिल है। इसीलिए जब 1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण किया तो दक्षिण भारत के लोग भी चीन को सबक सिखाने के लिए एकजुट